

KHAN G.S. RESEARCH CENTRE

Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6

Mob. : 8877918018, 8757354880

By : Khan Sir

(मानचित्र विशेषज्ञ)

HISTORY

मूर्ति कला तथा मंदिर निर्माण की शैली

मूर्ति बनाने की शैली

गंधार शैली

मथुरा शैली

अमरावती शैली

(i) गंधार शैली – इस शैली का विकास कुषाण वंश के प्रमुख शासक कनिष्क के शासन काल में हुआ था। सबसे पहले इस शैली में मूर्ति मिट्टी, चुना और प्लास्टर को मिलाकर बनाई जाती थी लेकिन इस प्रकार की मूर्ति बहुत कमजोर होती थी इसलिए बाद में ये काले और भूरे रंग के पत्थर से बनाए जाने लगे। ये मूर्तियाँ मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर भारत में बनाई जाती थी। जिसका प्रमुख केन्द्र तक्षशीला था। इस शैली की 95% मूर्तियाँ महात्मा बुद्ध की बनी थी। इस शैली में महात्मा बुद्ध के बहुत बड़े घुंघराले बाल दिखाए गए हैं। इस शैली में महात्मा बुद्ध को बहुत बलशाली, बलिष्ठ शरीर (गठिला), योग करते हुए, ध्यान की मुद्रा में और युवा अवस्था में दिखाया गया है। इसमें महात्मा बुद्ध के पीछे होलोमंडल या प्रभामंडल सेप दिखाई गई है। कपड़े को दोनों ओर से लपेटकर पुरा शरीर ढका हुआ है। इस शैली का उल्लेख वैदिक एवं सांस्कृतिक साहित्य में है। यह कला यूनान से प्रभावित है। इसलिए इसे ग्रीको इंडियन कला भी कहा जाता है। इस कला में मूर्ति बैठी, खड़ी आँखें बंद, योग और ध्यान मुद्रा में बनाई गई है। यह शैली अपोलो देवता से प्रभावित है।



(ii) मथुरा शैली – मथुरा शैली का विकास मुख्यतः उत्तर भारत में हुआ था। मथुरा, वाराणसी और कौशाम्बी इसके प्रमुख केन्द्र थे। इसकी शुरुआत मथुरा से हुई इसलिए इसे मथुरा शैली कहा जाता था। इस शैली में चौड़ा सिना, बालविहिन और नग्न मूर्तियाँ भी थी। ज्यादातर मुर्तियों में बायाँ हाथ आसन्नस्थ है और दाहिने हाथ को अभय मुद्रा (आशिर्वाद) मुद्रा में उठाये हुए हैं और कपड़े बाएँ कंधे पर पड़े हुए हैं। इस शैली में तीन धर्म की मूर्तियाँ मिलेगी बौद्ध + जैन + हिन्दू। यह शैली पूर्णतः भारतीय शैली थी। इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग हुआ है।



(iii) अमरावती शैली – इस शैली का विस्तार मुख्यतः दक्षिण भारत में थी। इस शैली में पूजा और योग को दिखलाकर कहानियों को दिखलाया गया है। इसमें कई मूर्तियाँ एक साथ बनाई गई थी। इस शैली की मूर्तियाँ मुख्यतः सफेद संगमरमर की बनाई जाती थी। इस कला की मूर्तियाँ जातक कथाओं की हैं। और इसे चित्रण के माध्यम से बनाया जाता है। ये दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के अमरावती नामक स्थान पर विकास हुआ। इसलिए इसे अमरावती शैली कहा जाता था।



शैली	जगह	रंग	वंश	धर्म	अवस्था	संकेत
गंधार	पश्चिम भारत	काला	कुषाण	बौद्ध	योग	चिंता
मथुरा	उत्तर भारत	लाल	कुषाण	बौद्ध + जैन + हिन्दू	आशिर्वाद	प्रसन्नता
अमरावती	दक्षिण भारत	सफेद	सातवाहन	बौद्ध	गुप	कहानी

स्थापत्य कला

भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।

भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपने चरम पर होती है।

मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

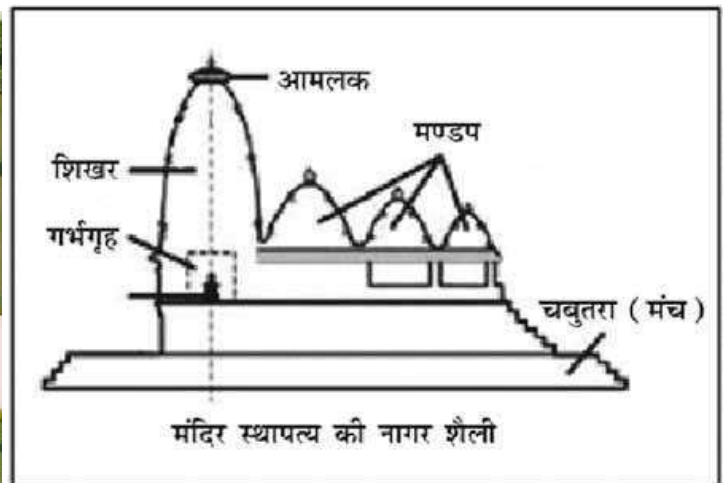
मंदिर निर्माण की शैली

नागर शैली

विमानन शैली
(द्रविड़ शैली)

बेशर शैली

(i) नागर शैली – नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखने को मिलते हैं। यह उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विंध्याचल पर्वत तक मिलते हैं। नागर शैली कि मंदिर का जो गुंबद होता है। वह नीचे चौड़ा होता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है पतला होते जाता है। यह गुंबद रेखीय होता है जिसे शिखर कहा जाता था शिखर के ऊपर एक रिंग बना दिया जाता है जिसे आमलक कहा जाता था। और आमलक के ऊपर एक कलश रख जाता था और कलश के बगल में एक ध्वज रखा जाता था। इसके शिखर ऊँचे नहीं होते हैं। शिखर के नीचे भगवान की मूर्ति रखी जाती है जहाँ भगवान की मूर्ति रखी जाती है उसे गर्भ गृह कहते हैं। पूरे मंदिर का सबसे प्रमुख जगह गर्भ गृह ही होता है। गर्भ गृह में ज्यादा भीड़ न हो इसलिए उसमें कई मंडप बने होते हैं ताकी वहाँ लोग प्रतिक्षा कर सकें। गर्भ गृह के दरवाजे पर गंगा और यमुना की मूर्ति की मुर्ति होती थी। इस शैली की मंदिरों में दो प्रकार की सिढ़ी होती थी शुरुआत की जो सिढ़ी होती थी उसे जगती, चबुतरा अगली सिढ़ी को पिठ कहा जाता था। गर्भ गृह ओर मंडप के बीच खाली जगह नहीं होते थे। गर्भ गृह के अंदर ही पदक्षिणा पथ (परिक्रमा) होता था। नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं होती थी। इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए इसे पंचायतन शैली कहा जाता था। इस मंदिर के चारों ओर बाउंडरी नहीं रहती थी। यहाँ किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि उत्तर भारत में नदियों की कोई कमी नहीं है। और मंदिर में कोई भाव्य गेट नहीं होता है। इस शैली की कई विशेषता थी जो उड़िसा में है उसे उड़िया शैली उसकी एक शाखा मध्य प्रदेश में है जो कंदरिया महादेव खजुराहो का मंदिर है। एक शाखा गुजरात में भी है जिसे शोलंकी शैली कहते हैं।



विमानन शैली / द्रविड़ शैली – द्रविड़ शैली का विकास चोल और पल्लव काल में हुए थे। ये मंदिर हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलती हैं। दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी इस शैली में वहाँ तलाब होते हैं। यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पुरी दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मेन गेट होते थे। जिसे हमलोग इनटरेस या गोपुरा कहते थे। मेन गेट के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी। यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था। मंदिर बीच में रहती थी इस शैली कि मंदिर सिद्धिनुमा होती है। और सिद्धिनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था। विमानन शैली में मंडप और गर्भ गृह सटा नहीं रहता है। उसमें अंतराल रहता है क्योंकि यही पर परिक्रमा किया जाता है। गर्भ गृह के बाहर दरवाजे पर यक्ष और यक्षीणी की मूर्ति लगी रहती है।



बेसर शैली – यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है। यह शैली विध्य से कृष्णा नदी तक मिलता है। इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसजित होता है।



कुछ प्रमुख शैली के उदाहरण-

नायक शैली - मिनाक्षी मंदिर (मदुरै)

विजयनगर शैली - विट्ठल स्वामी मंदिर (विजय नगर), लोटस महल (हम्पी)

होयशल शैली-

पाल शैली -

कुछ प्रमुख मंदिर और उसकी शैली

नागर शैली

- (i) भितरगांव मंदिर - कानपुर
- दशावतार मंदिर - झांसी
- लक्ष्मण मंदिर - सिहपुर
- कन्दरिया महादेव मंदिर - खजुराहो (एम.पी.)
- लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर (उड़ीसा)
- जगन्नाथ मंदिर - पुरी (उड़ीसा)
- सूर्यमंदिर - कोणार्क उड़ीसा

द्रविड़ शैली

- (i) वृहदेवश्वर मंदिर - तंजावुर
- शिवमंदिर - गंगैयकोडचोलपुरम
- महावलीपुरम रथ मंदिर - महावलिपुरम

वेसर शैली

- (i) डोडा वेसप्पा - दम्बल
- बदामी के मन्दिर

